नमूना प्रश्न पत्र-2 (हिन्दी पाठ्यक्रम ब के लिए)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश –

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए –

(1) प्रश्न-पत्र के दो खंड है – खंड 'अ' और खंड 'ब'।

(2) 'अ' में कुल 9 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए है। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(3) 'ब' में कुल 8 वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

प्र.1 नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1 × 5 = 5)

समय एक अमूल्य धन है। समय मनुष्य को बलवान और निर्बल बनाता है। समय स्वाधीन है और उसके रथ के पहिये निरन्तर गतिशील रहते है। वे कभी रूकना नहीं जानते। समय की यह गति मनुष्य को प्रभावित करती है। यदि यह कहा जाए कि समय उतार चढ़ाव ही मनुष्य जीवन का उत्थान पतन है तो अनुचित न होगा। समय ही शिशु का युवक, युवक को वृद्ध और वृद्ध को मृत्यु की गोद में ले जाता है: अत: मनुष्य जीवन के निर्माण, परिवर्तन एवं सुधार में सहायक होने के कारण समय उसके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। समय सच्चा एवं अमूल्य धन है। यह ईश्वरीय वरदान सबके लिए है। कोई भी इससे वंचित नहीं है। यह एक ऐसी पूँजी है, जो निर्धन और धनवान सभी के पास बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध है; अत: इस धन के उपयोग के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। समय प्रत्येक व्यक्ति को अवसर देता है। जो इसका उपयोग करता है, इस अमूल्य धन का अपव्यय एवं दुरूपयोग नहीं करता, वह मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं विधाता बनता है। इसके विपरीत, जो अवसर को हाथ से खो देता है अथवा इसे व्यर्थ ही नष्ट कर देता है, समय उसका सर्वनाश कर देता है। समय का सदुपयोग ही जीवन की सफलता का मूलमंत्र हे। हम केवल प्राप्त क्षण का ही उपयोग कर सकते है। भविष्य में समय के सदुपयोग के विषय में न सोचने वाला व्यक्ति सदा टाल मटोल की प्रवृत्ति का अभ्यस्त हो जाता है और उसका 'आज' तो 'कल' में बदल जाता है और 'आने वाला कल' कभी कभी 'न आने वाला कल' हो जाता है: अत: आज को कल पर छोड़ने की प्रवृत्ति समय का सदुपयोग करना नहीं कहलाती।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए –

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक होगा –

(अ) समय का सदुपयोग (ब) सुनहरा भविष्य (स) आने वाला कल (द) जीवन की सफलता।

2. समय की गति मनुष्य जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है –

(अ) समय मनुष्य को बलवान और निर्बल बनाता है (ब) समय के रथ के पहिये निरन्तर गतिशील रहते है

(स) समय का उतार चढ़ाव ही मनुष्य जीन का उत्थान पतन है (द) उपर्युक्त सभी

3. समय को ईश्वरीय वरदान क्यों कहा गया है –

(अ) समय सच्चा एवं अमूल्य धन है

(ब) समय ऐसी पूँजी है, तो एकसमान रूप से निर्धन के पास भी है और धनवान के पास भी है

(स) समय प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर देता है

(द) समय जीवन की सफलता का मूलमंत्र है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. 'दुरूपयोग' शब्द का संधि-विच्छेद है -

(अ) दुरू + उपयोग (ब) दु + उपयोग (स) दुर + उपयोग (द) दुरूप + योग

5. स्वयं का भाग्य-विधाता होता है -

(अ) आज को 'कल' में बदलने वाला (ब) समय को अमूल्य धन मानने वाला

(स) समय के सदुपयोग की सोचने वाला (द) समय का सदुपयोग करने वाला।

अथवा

जनसाधारण की भलाई के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के कुछ ऐसे विज्ञापन दिए जाते है, जिनका लक्ष्य अच्छी सरकार, सामुदायिक विकास, वैज्ञानिक सफलताएँ, शिक्षा-सुधार, सार्वजनिक स्वास्थ्य, वन्य प्राणी-रक्षा, यातायात सुरक्षा तथा धार्मिक एकता को बनाए रखना होता है। इसके अतिरिक्त इनसे बाजारों में उपभोक्ता को उत्पाद वस्तुओं के चयन में सहायता मिलती है। कृषि के क्षेत्र में किसानों को कीटनाशक औषधियों और उनके प्रयोग करने की जानकारी, परिवार नियोजन तथा बच्चे को टीका लगाने की जानकारी आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापनों से मिल सकती है। समाज कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का मुख्य लक्ष्य जनता में विवेक उत्पन्न करना, उसके जीवन स्तर को ऊँचा उठाना, उसका सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास करना आदि रहा है। आधुनिक युग में विज्ञापन जीवन के अभिन्न अंग बन गए है। उपभोक्ता को शिक्षित करना, उत्पादक को लाभ पहुँचाना, विक्रेता की सहायता करना, उत्पादक तथा उपभोक्ता के बीच मधुर संबंध स्थापित करना तथा लोक सेवा करना विज्ञापन के प्रमुख कार्य है। इस प्रकार आज हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञापनमय हो गया है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए -

1. आधुनिक युग में जीवन का अभिन्न अंक क्या बन गए है -

(अ) आध्यात्मिक विकास (ब) विज्ञापन (स) धर्म (द) बौद्धिकता।

2. सामुदायिक विकास, शिक्षा-सुधार, सुरक्षा तथा धार्मिक-एकता को बनाए रखने हेतु दिए गए विज्ञापनों का क्या उद्देश्य होता है -

(अ) जनसाधारण की भलाई (ब) सरकारी कमाई

(स) उपभोक्ता को शिक्षित करना (द) शिक्षा सुधार

3. समाज कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का मुख्य लक्ष्य जनता का कौनसा विकास करना है -

(अ) सांस्कृतिक (ब) बौद्धिक (स) आध्यात्मिक (द) ये सभी।

4. आज हमारा सम्पूर्ण जीवन कैसा हो गया है -

(अ) नीरस (ब) विज्ञापनमय (स) मधुर (द) आध्यात्मिक।

5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए -

(अ) आध्यात्मिक विकास (ब) जनसाधारण की भलाई (स) विज्ञापन का महत्व (द) इनमें से कोई नहीं।

प्र.2 नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (1 × 5 = 5)

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास करना है; जिसके अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षमताएँ सम्मिलित है। शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है, जिससे वह अपने कर्तव्यों का सम्यक् परिपालन कर सके। बौद्धिक विकास से अभिप्राय केवल यह नहीं है कि शिक्षित व्यक्ति कुछ तथ्यों को जान लेता है, बल्कि यह है कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसा व्यवहार करता है, जो सुबुद्धि विरोधी न हो। साहित्य और ललित कलाओं के प्रति अनुराग और उनके स्तर की पहचान को भी शिक्षित व्यक्ति का एक आवश्यक गुण समझा जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति वैचारिक स्तर पर भी ऊँचा उठ जाता है। उसका 'स्व' विस्तृत होता है; क्योंकि वह 'स्वहित' से अधिक परहित को महत्व देता है और देशहित के आगे सबकुछ निछावर कर सकता है। केवल साक्षर होना, पढ़-लिख लेना शिक्षित होना नहीं है। यदि हम विनम्र नहीं है, उदार और सहनशील नहीं है, देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानते तो हम डिग्रीधारी भले ही हों, शिक्षित कदापि नहीं कहलाएँगे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए –

1. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए –
(अ) शिक्षा (ब) शिक्षा का उद्देश्य
(स) साहित्य और ललित कला (द) साक्षरता।

2. मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास किसका उद्देश्य है –
(अ) साहित्य का (ब) शिक्षा का (स) कला का (द) नैतिकता का।

3. शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान किस उद्देश्य से रखता है –
(अ) कर्तव्यो के सम्यक् परिपालन हेतु (ब) ताकत हेतु
(स) प्रदर्शन हेतु (द) स्वहित हेतु।

4. साहित्य और ललित–कलाओं के प्रति अनुराग किसका आवश्यक गुण समझा जाता है –
(अ) अशिक्षित व्यक्ति का (ब) शिक्षित व्यक्ति का (स) कलाकार का (द) विचारक का।

5. शिक्षित व्यक्ति 'स्वहित' से अधिक किसे महत्व देता है –
(अ) शिक्षा को (ब) स्वार्थ को (स) परहित को (द) नैतिकता को।

अथवा

कुछ लोग विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता का मुख्य कारण माता पिता की ढिलाई मानते है। माता पिता के संस्कार ही बच्चे पर पड़ते है। बच्चे की प्राथमिक पाठशाला घर होता है। यदि घर का वातावरण ही दोषपूर्ण है तो उसके संस्कार उन्नत कैसे हो सकते है? माता पिता पहले तो प्यार के कारण बच्चे के खराब व्यवहार, अशिष्टता और खराब भाषा की ओर ध्यान नहीं देते, और वे विद्यालय तथा शिक्षकों की आलोचना करना आरम्भ कर देते है। बच्चों के दोषपूर्ण व्यवहार और संस्कारो का एक कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली भी है, जिसमें नैतिक या चारित्रिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया जाता। पहले विद्यार्थियों को दंड का भय बना रहता था, किंतु अब शारीरिक दंड अपराध माना जाता है, शिक्षक केवल जबानी जमा खर्च ही कर सकते है। पश्चिमी संगीत, नृत्य तथा चलचित्रों ने भी बहुत हानि पहुँचाई है। इनके कारण उनमें चारित्रिक दृढ़ता न रहकर उच्छृंखलता इस सीमा तक बढ गई है कि यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो देश का भविष्य ही अंधकारमय हो सकता है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए –

1. कुछ लोग विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता का मुख्य कारण किसे मानते है –
(अ) शिक्षकों की ढिलाई को (ब) माता–पिता की ढिलाई को
(स) विद्यालय की ढिलाई को (द) शारीरिक दंड को

2. किसके संस्कार बच्चों पर पड़ते है –
(अ) माता पिता के (ब) समाज के (स) घर के (द) शिक्षक के।

3. क्या दोषपूर्ण होने पर विद्यार्थियों के संस्कार उन्नत नहीं हो पाते –
(अ) घर का वातावरण (ब) शिक्षा–प्रणाली (स) व्यवहार (द) इनमें से कोई नहीं।

4. बच्चों के व्यवहार और संस्कारों को किसने और अधिक हानि पहुँचाई है –
(अ) पश्चिमी संगीत (ब) पश्चिमी नृत्य (स) चलचित्र (द) ये सभी।

5. बच्चों की प्राथमिक पाठशाला होता है –
(अ) विद्यालय (ब) घर (स) समाज (द) इनमें से कोई नहीं

प्र.3 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्ही चार भागों के उत्तर दीजिए। **(1 × 4 = 4)**

1. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक कार्य करता है तो कहलाता है –
(अ) पदबंध (ब) पद (स) वर्ण (द) समस्तपद।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. 'मोहना धीरे धीरे चलकर वहाँ जा पहुँची।' रेखांकित वाक्यांश है –

(अ) क्रिया पदबंध (ब) संज्ञा पदबंध (स) क्रियाविशेषण पदबंध (द) विशेषण पदबंध।

3. विशेषण पदबंध है –

(अ) विनोद एक आलसी और कमजोर लड़का है (ब) वह खाना खाकर सो गया

(स) हमारी टीम ने अच्छा खेला (द) सूरज उग आया है।

4. सर्वनाम पदबंध नहीं है –

(अ) सदैव साथ देने वाले तुम मेरे सच्चे मित्र हो (ब) दुर्भाग्य का मारा मैं इधर उधर भटकता रहा

(स) बंगलुरू जाने वाली गाड़ी देर से जाएगी (द) सोच समझकर चलने वाला वह कैसे भटक गया।

5. 'वे चार खिलाड़ी लड़के' में शीर्षपद है –

(अ) वे (ब) चार (स) खिलाड़ी (द) लड़के

प्र.4 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए – **(1 × 4 = 4)**

1. 'रमन बाजार से मिठाई लाया।' वाक्य में उद्देश्य है –

(अ) रमन (ब) बाजार से (स) मिठाई (द) लाया।

2. जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे कहते है –

(अ) संयुक्त वाक्य (ब) मिश्र वाक्य (स) सरल वाक्य (द) आश्रित वाक्य

3. सरल वाक्य है –

(अ) मैं पुस्तकें खरीदने बाजार गया (ब) वह घर गया और काम पर लग गया

(स) जब वर्षा हो रही थी, तब में घर में ही था (द) वह नाराज था, इसलिए मेरे घर नहीं आया।

4. 'उस लड़के के बुलाओ, जिसके लंबे बाल है।' रेखांकित वाक्यांश है –

(अ) संज्ञा उपवाक्य (ब) विशेषण उपवाक्य (स) सर्वनाम उपवाक्य (द) क्रियाविशेषण उपवाक्य

5. 'पुलिस के आते ही गली में सन्नाटा छा गया।' का मिश्र वाक्य में रूपान्तरण होगा –

(अ) पुलिस आई और गली में सन्नाटा छा गया (ब) जैसे ही पुलिस आई, गली में सन्नाटा छा गया

(स) पुलिस आने के कारण गली में सन्नाटा छा गया (द) पुलिस आई, इसलिए गली में सन्नाटा छ गया।

प्र.5 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए– **(1 × 4 = 4)**

1. जिस समास में एक पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है, उसे कहते है –

(अ) तत्पुरूष समास (ब) द्वंद्व समास (स) कर्मधारय समास (द) अव्ययीभाव समास।

2. 'रामलीला' मे समास है –

(अ) तत्पुरूष समास (ब) कर्मधारय समास (स) बहुव्रीहि समास (द) द्विगु समास

3. अव्ययीभाव समास का उदाहरण है –

(अ) दशानन (ब) दूध–दही (स) कमलनयन (द) यथासंभव।

4. 'तत्पुरूष समास' नहीं है –

(अ) राजदूत (ब) वनवास (स) रोगमुक्त (द) मुख्यमंत्री

5. 'गजानन' का समास विग्रह है –

(अ) गज और आनन (ब) गज का आनन

(स) गज के समान है आनन जिसका (गणेश) (द) गज जैसा आनन।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.6 निम्नलिखित चारों भागों के उत्तर दीजिए– (1 × 4 = 4)

1. 'काम निकलते ही उसने आँखें ....।' रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से कीजिए –

(अ) चुरा ली (ब) बंद कर ली (स) फेर ली (द) नचा दी।

2. 'अत्यंत परिश्रमी होना।' के लिए उपयुक्त मुहावरा है –

(अ) काँटो पर लेटना (ब) कमर टूटना (स) खेत रहना (द) कोल्हू का बैल।

3. 'रवि अपने माता पिता के लिए ....है।' रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त मुहावरा है –

(अ) चिकना घड़ा (ब) अंधे की लकड़ी (स) ईद का चाँद (द) गले की फाँस।

4. मैं तुम्हे ऐसा मारूँगा कि छठी ....। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(अ) उँगली याद आ जाएगी (ब) कक्षा में चले जाओगे (स) मंजिल से कूद जाओगे (द) का दूध याद आ जाएगा।

प्र.7 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए– (1 × 4 = 4)

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीन बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए–

1. मीरा चाकरी करना चाहती है –

(अ) राजा की (ब) श्री कृष्ण की (स) अपने गुरू की (द) इनमें से कोई नहीं।

2. श्रीकृष्ण की चाकर बनी मीरा के कार्यो में सम्मिलित नहीं है –

(अ) सुंदर बाग लगाना (ब) नित्य उठकर दर्शन करना
(स) गोविन्द का लीलागान करना (द) भोजन बनाना।

3. मीरा के लिए जागीर है –

(अ) हरि–दर्शन (ब) हरि–स्मरण (स) हरि की भावपूर्ण भक्ति (द) धन–दौलत

4. मीरा साँवरिया के दर्शन करना चाहती है –

(अ) साधारण वस्त्र पहनकर (ब) कुसुंबी साड़ी पहनकर (स) आभूषणों से सज धजकर (द) श्वेत वस्त्र धारण करके।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.8 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए – (1 × 5 = 5)

किसी तरह रात बीती। दोनों के हृदय व्यथित थे। किसी तरह आँचरहित एक ठंडा और ऊबाऊ दिन गुजरने लगा। शाम की प्रतीक्षा थी। तताँरा के लिए मानो पूरे जीवन की अकेली प्रतीक्षा थी। उसके गंभीर और शांत जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था। वह अचंभित था, साथ ही रोमांचित भी। दिन ढलने के काफी पहले वह लपाती की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। वामीरों की प्रतीक्षा में एक एक पल पहाड़ की तरह भारी था। उसके भीतर एक आशंका भी दौड़ रही थी। अगर वामीरो न आई तो? वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। सिर्फ प्रतीक्षारत था। बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी। वह बार बार लपाती के रास्ते पर नजरें दौड़ता। सहसा नारियल के झुरमुटों में उसे एक आकृति कुछ साफ हुई .... कुछ और ..... कुछ और। उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा। सचमुच वह वामीरो थी। लगा जैसे वह घबराहट में थी। वह अपने को छुपाते हुए बढ़ रही थी। बीच बीच में इधर उधर दृष्टि दौड़ना न भूलती। फिर तेज कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आकर ठिठक गई। दोनों शब्दहीन थे। कुछ था जो दोनों के भीतर बह रहा था। एकटक निहारते हुए वे जाने कब तक खड़े रहे। सूरज समुद्र की लहरों में कहीं खो गया था। अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ दौड़ पड़ी। तताँरा अब भी वहीं खड़ा था ..... निश्चल ...... शब्दहीन।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए–

1. गद्यांश के लेखक है –

(अ) प्रेमचंद (ब) सीताराम सेकसरिया (स) लीलाधर मंडलोई (द) प्रहलाद अग्रवाल।

2. तताँरा और वामीरो के हृदय व्यथित थे –

(अ) एक दूसरे के विरह में (ब) परस्पर झगड़े के कारण

(स) फिर कभी न मिल पाने के कारण (द) एक दूसरे को बुरा भला कहने के कारण।

3. दिन ढलने से पहले तताँरा पहुँच गया –

(अ) वामीरो के गाँव में (ब) अपने गाँव में

(स) लपाती की समुद्री चट्टान पर (द) समुद्र से दूर।

4. तताँरा को वामीरो कहाँ दिखाई दी –

(अ) बाग में (ब) लताओं के पीछे (स) नारियल के झुरमुटों में (द) समुद्र के किनारे।

5. 'दोनो शब्दहीन थे'? इसका कारण था –

(अ) एक दूसरे का भय (ब) प्रथम मिलन का संकोच (स) एक दूसरे से नाराजगी (द) सुध बुध खो जाना।

प्र.9 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए – (1 × 5 = 5)

वह एक छह मंजिली इमारत थी, जिसकी छत पर दफ्ती की दीवारोंवाली और तातामी (चटाई) की जमीनवाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब सा एक मिट्टी का बरतन था। उसमें पानी भरा हुआ था। हमने अपने हाथ पाँव इस पानी से धोए। तौलिए से पोंछे और अंदर गए। अंदर 'चाजीन' बैठा था। हमें देखकर वह खड़ा हुआ। कमर झुकाकर उसने हमें प्रणाम किया। दो ..... झो ..... (आइए, तशरीफ लाइए) कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह हमें दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिये से बरतन साफ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए-

1. गद्यांश के लेखक का नाम है।

(अ) अंतोन चेखव (ब) निदा फाजली (स) रवींद्र केलेकर (द) प्रहलाद अग्रवाल

2. इमारत में मंजिलें थी –

(अ) सात (ब) आठ (स) दस (द) छह।

3. 'चाजीन' द्वारा आगंतुकों के स्वागत की क्रियाओं में सम्मिलित नहीं है –

(अ) देखकर खड़ा होना (ब) कमर झुकाकर प्रणाम करना

(स) दो .... झो .... कहकर स्वागत करना (द) पुष्प भेंट करना।

4. चाय बनाने की प्रक्रिया में सम्मिलित नहीं है –

(अ) अँगीठी सुलगाना (ब) अँगीठी पर चायदानी रखना

(स) तौलिये से बरतन साफ करना (द) दूध उबालना।

5. 'चाजीन' ने सभी क्रियाएँ की थीं –

(अ) गरिमापूर्ण ढंग से (ब) असभ्यतापूर्वक (स) अनमने ढंग से (द) जल्दबाजी में।

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- (2 × 2 = 4)

(अ)सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया ?

(ब) निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है ?

(स) पावस के दृश्य को कवि इंद्रजाल क्यों मानता है ?

प्र.11 निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- (4)

'अहंकार मनुष्य का विनाश करता है।' इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई ने क्या-क्या उदाहरण दिए ? बड़े भाई साहब पाठ के आधार पर 60-70 शब्दों में उत्तर लिखिए।

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए- (3 × 2 = 6)

(अ) नाम के चक्कर में पड़कर लोग क्या भूल गए है ? टोपी ने ऐसा क्या कह दिया कि रामदुलारी की आत्मा गनगना उठी ?

(ब) पंद्रह बीघा जमीन के लालच ने किस तरह लोगों के आपसी सद्भाव को बिगाड़ दिया था ? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर लिखिए। यह घटना आपके मन पर क्या प्रभाव डालती है ?

(स) 'सपनों के -दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी ? जीवन मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए।

प्र.13 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए- (6)

(अ) **संघर्ष ही जीवन है – संकेत-बिंदु** – संघर्ष कर्म का दूसरा नाम, संघर्षमय जीवन ही असली जीवन, संघर्ष ही जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा।

(ब) **व्यायाम का महत्त्व – संकेत-बिंदु** – स्वस्थ शरीर का महत्त्व, शरीर को स्वस्थ रखने का उपाय-व्यायाम, व्यायाम के प्रकार, व्यायाम करने से लाभ।

(स) **युवाओं में निराशा की भावना – संकेत-बिंदु** – जीवन यापन के दो दृष्टिकोण, शिक्षा के आधार पर सफलता न मिलना, उचित शिक्षा व स्वस्थ निर्देशन की आवश्यकता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.14 नगरों में कल-कारखानों से प्रदूषण में हो रही वृद्धि को रोकने हेतु किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। (5)

अथवा

आपके मोहल्ले में बिजली प्राय:रात्रि के समय कई-कई घंटों के लिए चली जाती है। बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों से अवगत कराते हुए बिजली विभाग के संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।

प्र.15 रोटरी क्लब की ओर से बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। आप रोटरी क्लब, हरिद्वार के अध्यक्ष होने के नाते सभी हरिद्वारवासियों को इसकी सूचना प्रदान कीजिए। (5)

अथवा

आप जल-विभाग के सचिव हैं। पानी के पाइप की मरम्मत के कारण गोविंदपुरी, दिल्ली के क्षेत्रवासियों को जल आपूर्ति की कटौती की सूचना दीजिए।

प्र.16 किसी लैपटॉप कंपनी की ओर से लगभग 25 से 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (5)

अथवा

किसी ऋण उपलब्ध कराने वाली कंपनी की ओर 25 से 50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्र.17 एक मौलिक कथा लिखिए, जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो ''जैसी करनी वैसी भरनी।'' (5)

अथवा

''संगठन में शक्ति होती है'' कहावत को आधार बनाकर मौलिक कथा लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

1.	(1) (अ)	(2) (स)	(3) (ब)	(4) (स)	(5) (द)
	अथवा				
	(1) (ब)	(2) (अ)	(3) (द)	(4) (ब)	(5) (स)
2.	(1) (ब)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (ब)	(5) (स)
	अथवा				
	(1) (ब)	(2) (अ)	(3) (अ)	(4) (द)	(5) (ब)
3.	(1) (ब)	(2) (स)	(3) (अ)	(4) (स)	(5) (द)
4.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (ब)	(5) (ब)
5.	(1) (स)	(2) (अ)	(3) (द)	(4) (द)	(5) (स)
6.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (ब)	(4) (द)	
7.	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (ब)	
8.	(1) (स)	(2) (अ)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (ब)
9.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (द)	(4) (द)	(5) (अ)

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.10

(अ) सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का इसलिए रह गया; क्योंकि उससे दस कारतूस माँगकर ले जाने वाला सवार कोई और नहीं, बल्कि खुद वजीर अली था, जिसे पकड़ने के लिए वे सालों से जंगल में डेरा डाले हुए थे। वह जिस निडरता से खेमें में आया, चालाकी से कर्नल से कारतूस हासिल किए और फिर अपना नाम बताकर उसी प्रकार चला भी गया। कर्नल उसका कुछ भी न बिगाड़ सका। वजीर अली के इस साहस को देखकर कर्नल हक्का-बक्का रह गया।

(ब) निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह विश्वास है कि बहुत समय पहले लिटिल अंडमान और कार निकोबार द्वीपसमूह आपस में मिले हुए थे। उस समय निकोबार द्वीप में यह परम्परा विद्यमान थी कि एक गाँव का युवक दूसरे गाँव की युवती से विवाह नहीं कर सकता। तताँरा नामक एक युवक को दूसरे गाँव की युवती वामीरो से प्रेम हो गया तो गाँव वालो ने इसका विरोध और ततॉरा का अपमान किया, जिससे क्रोधित होकर ततॉरा ने अपनी तलवार धरती में गाड़ दी और खींचते-खींचते वह दूर तक चला गया। इसने धरती के दो भाग कर दिए। एक निकोबार, दूसरा अंडमान।

(स) इंद्रजाल जादूगरी को कहते हैं। इसमें जादूगर पल पल में नए नए चमत्कार दिखाता है। पावस में भी पल पल में प्रकृतत में अदभूत परिवर्तन होते रहते है। कभी घने बादल सारे पर्वत प्रदेश को ढक लेते है, कभी मूसलाधर वर्षा से सबकुछ अदृश्य हो जाता है, कभी पर्वत आसमान में उड़ते हुए लगते है। और कभी तालाबों से उठती जलवाष्प से उमें आग लगाने का भम्र होने लगता है। क्षण क्षण होते इन परिवर्तनों के कारण ही पावस के दृश्य को इंद्रजाल कहा गया है।

उ.11 सबसे पहले बड़े भाई ने रावण का उदाहरण दिया। रावण भूमंडल का स्वामी था। वह चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी राजा उसके अधीन थे। 'आग' और 'पानी' के देवता भी उसके दास थे। वह अंग्रजों से भी अधिक शक्तिशाली और महान था। लेकिन घमंड ने उसका नामो-निशान मिटा दिया। उसे कोई चुल्लू भर पानी देने वाला भी नहीं बचा। इसी प्रकार शैतान को घमंड हो गया था कि वह ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त है। इस घमंड के कारण उसे स्वर्ग से नरक वह भीख माँग माँगकर मर गया। बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कि तुम्हें भी पास होने का घमंड हो गया है, जबकि तुम अपनी मेहनत के पास नहीं हुए हो, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लग गई है। इसलिए तुम घमंड मत करो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.12

(अ) नाम के चक्कर में पड़कर लोग इस सत्य को भूल गए है कि ईश्वर एक है। उसके बनाए मनुष्य भी समान है। लोगो ने ईश्वर को नामों के द्वारा बाँट लिया है। वे भूल गए है कि कृष्ण को हम अवतार कहते है और मुहम्मद साहब को पैगंबर। दोनों दूध देने वाले पशुओं को चराया करते थे। हम हिन्दी और उर्दू के लिए भी लड़ते है, लेकिन भूल गए है कि ये एक ही भाषा हिंदवी के नाम है। नाम के आधार पर मानवता का बँटवारा ठीक नहीं है। मुसलमान माँ 'अम्मी' कहते है और हिंदू 'मा'। टोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कह दिया। इस नाम बदलने से उसके घर में ऐसा भूचाल आया कि दादी सुभद्रा देवी खाना छोड़कर चली गई। उसकी माँ रामदुलारी की आत्मा इस शब्द को सुनकर इतनी आहत हुई कि उसने टोपी की बहुत पिटाई की। उन्हें लगा कि इस शब्द के प्रयोग से उनके घर की परंमपराएँ टूट गई है और धर्म भ्रष्ट हो गया है।

(ब) धन-दौलत के लालच में लोग महत्वपूर्ण संबंधो को नष्ट कर डालते है तथा आपनी सद्‌भाव को बिगाड़ लेते है। यह बात 'हरिहर काका' कहानी में बहुत अच्छी प्रकार बताई गई है। हरिहर काका के पास पन्द्रह बीघा जमीन थी। उनकेभाई उस जमीन पर नजर गढ़ाए हुए थे और उसे हड़पना चाहते थे।

ठाकुरबारी के महंत की लालची नजरे भी हरिहर काका की जमीन पर टिकी हुई थीं। महंत चाहता था कि हरिहर काका अपनी मौत से पहले अपनी जमीन अपने भाइयों के नाम न कर ठाकुरबाजी के नाम कर दें। हरिहर काका के भाई भी जानते थे कि अगर हरिहर काका ने जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दी तो वे कहीं के नहीं रहेगे। पंद्रह बीघे उपजाऊ जमीन दो लाख से अधिक की संपित्त थी। हरिहर काका की यह जमीन उनकी जान की दुश्मन बनी हुई थी। जमीन के लालच में पहले तो ठाकुरबारी के महंत ने उनके साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया तथा उनको ठाकुरबारी में आकर रहने को कहा, परन्तु जब हरिहर काका अपने भाइयों के निवेदन पर आपस अपने घर आ गए तो महंत ने अपने लोगो के साथ उनके घर जाकर उनका अपहरण कर लिया तथा ठाकुरबारी में जोर जबरदस्ती से जमीन ठाकुरबारी के नाम कराने की कोशिश की। उनके अपने ही भाइयों ने भी जमीन के लालच में उनके साथ मारपीट की। महंत तो पराया था, मगर उन्हे अपने सगे भाइयों से यह उम्मीद नहीं थी। यह घटना हमारे मन में बहुत ही बुरा प्रभाव डालती है कि किस प्रकार जमीन जायदाद के लालच में लोग अपने आपसी सद्‌भाव को भूलकर एक दूसरे के बैरी बन जाते है।

(स) हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी बच्चों के प्रति बहुत उदार और संवेदनशील थे। वे बालमन को अच्छी प्रकार समझते थे। बहुत गुस्सा होने पर भी वे बच्चों को बहुत हल्की सी चपत लगाते थे, जिसके लगने पर बच्चे सिर झुकाकर हँसने लगते थे। बच्चों को मारने पीटने वाले अध्यापकों को वे पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने चौथी कक्षा के बच्चों को बर्बरतापूर्वक दंड देने वाले पी. टी. साहब प्रीतमचंद को पहले डाँटा और फिर मुअत्तल कर दिया। बच्चे तन मन से बहुत कोमल और संवेदनशील होते है। गलती करना तो बच्चों का शारीरिक दंड देना आज कानूनन अपराध है। यह मानव मूल्यों के विरूद्‌ध है। अत: हेडमास्टर शर्मा जी ने बच्चों को कठोर दंड दने वाले पी. टी. साहब के साथ जो व्यवहार किया और ऐसे अध्यापकों के प्रति उनकी जो धारणा थी, वह हमारे विचार से उचित हैं।

उ.13

(अ) इस संसार में सर्वत्र संघर्ष हैं संघर्ष से ही उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। संघर्ष का दूसरा नाम कर्म है। संघर्ष से भयभीत होना अकर्मण्यता है। हमें प्रतिक्षण कर्त्तव्य पालन के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। सुख-धन, वैभव एवं ऐश्वर्य में नहीं बल्कि त्याग में है। कर्तव्यविहीन होने पर स्वर्ग जैसा सुख भी एक दिन छिन जाता है। पुरूषार्थ द्वारा दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है। धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरूषार्थों द्वारा चौथा पुरूषार्थ मोक्ष सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। हमें पांडवों की तरह धर्म के लिए संघर्ष करना चाहिए, कौरवों की तरह भोग के लिए नहीं। हमें लक्ष्य के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए अपने मन तथा अपनी इंद्रियों से संघर्ष करना चाहिए, संघर्षमय जीवन ही असली जीवन है। जो लोग संघर्ष से घबराते हैं, उन्हें परमात्मा की स्वर्णिम सहायता का अनुभव प्राप्त नहीं होता। संघर्ष से ही जीवन में सामर्थ्य और क्षमता अर्जित की जाती है, जो जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है। संघर्ष अभिशाप नहीं बल्कि जीवन को परिष्कृत करने का अवसर है। मानव जीवन में जब तक उतार- चढ़ाव नहीं आते, तब तक जीवन के वास्तविक सत्य से हम परिचित नहीं हो सकते है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ब) स्वस्थ शरीर ही सबसे बड़ा धन है। अत: शरीर को स्वस्थ रखना अत्यंत आवश्यक है, तभी जिंदगी की गाड़ी सुचारू रूप से आगे बढेगी। शरीर को स्वस्थ रखने का सबसे अच्छा उपाय है- व्यायाम। खेलना-कूदना, सैर करना, श्रम करना आदि व्यायाम के ही प्रकार हैं। खेल व्यायाम का सबसे मनोरंजक प्रकार है। क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, वॉलीबाल, बास्केटबॉल आदि खेल खेलने से शरीर में स्फूर्ति, जोश और उमंग पैदा होती है। व्यायाम करने से शरीर चुस्त रहता है तथा मन तरोताज़ा रहता है।। बच्चों का व्यायाम खेलकूद से हो जाता है लेकिन आजकल खेलकूद की जगह टी.वी. ने ले ली है। उन्हें खेलने-कूदने से ज़्यादा टी.वी के सामने बैठकर कार्टून देखना, वीडियों गेम खेलना अच्छा लगता है। यही कारण है कि छोटे-छोटे बच्चों को अनेक बीमारियों ने घेर लिया है। जो लोग प्रतिदिन व्यायाम करते है, उन्हें कम-से-कम बीमारियाँ होती हैं। व्यायाम करने से हमारा शरीर तंदुरूस्त और ताकतवर बनता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम बहुत जरूरी है। जो व्यक्ति प्रतिदिन व्यायाम करते हैं उनके अंदर नीरसता व आलस्य का वास नहीं होता बल्कि, कुछ नया करने की चाह होती है। अत: अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

(स) भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन यापन के दो दृष्टिकोण हैं। एक में मानव स्वलक्ष्यसिद्धी प्रक्रिया व उसके परिणाम पर अटल विश्वास और निष्ठा रखते हुए कर्म में संलग्न रहकर जीवन को अविराम गति देता है। यह स्थिति आशावादी दृष्टिकोण की परिचायक होती है। दूसरी स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है, जिसमें मानवमात्र कर्म-प्रतिफल के द्वंद्वात्मक संघर्ष में स्वयं को संतुलित नहीं रख पाता है और आत्मबलहीनता का शिकार हो जाता है। परिणातम: कर्म और प्रतिफल दोनों के प्रति ही उसमें अनासक्ति भाव जागृत होता है, जो निराशा का जनक होता है। इस स्थिति को प्राप्त व्यक्ति निराशावादी दृष्टिकोण के होते हैं। इनमें व्याप्त नैराश्य का कारण व्यक्ति का चिंतन, संस्कार, वातावरण, कार्य शैली, शिक्षा स्तर व दिशा दर्शन होते है। प्रत्येक बाल जब किशोरावस्था में प्रथम चरण रखता है, तो उसके मस्तिष्क में भावी जीवन के कुछ स्वप्न होते है। प्रत्येक बालक जब किशोरावस्था में प्रथम चरण रखता है, तो इस कल्पना के साथ वह विद्यालयी शिक्षा में जुट जाता है कि उन्हीं आदर्शों के सहारे वह अपने स्वप्न साकार करेगा। जब उसके युवा होने का आभास तत्कालीन समाज द्वारा मिलने लगता है, उस समय उसके पास मात्र डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र होते है, जो उसे और उसके भविष्य को और उलझाकर रख चुके होते हैं, क्योंकि विश्वविद्यालय स्तर तक की प्राप्त शिक्षा उसे सुदृढ़ आधार दे सकने में समर्थ नहीं बना पाती। जब वह अपने से अल्पशिक्षित या अशिक्षित को संपन्न देखता है तो उसमें हीनभावना आ जाती है। उस समय उसे वह शिक्षा खोखली और निरर्थक प्रतीत होती है। उसका मनोबल गिरता है और वह युवा अपने को परिस्थितियों के सम्मुख समर्पित कर देता है। समाज के निर्देशन के कारकों द्वारा ऐसे वातावरण की स्थापना न करना जिसमें सैद्धांधिक शिक्षा व स्वस्थ निर्देशन मिले, तो शायद ही कोई युवा नैराश्य का शिकार हो। विषम-से-विषम परिस्थितियों में वह खरा और तपा हुआ सोना सिद्ध हो सकता है। उचित शर्त यही है कि उसे सत्कर्म की और प्रेरणार्थक शिक्षा मिली हो और समाज में व्यवहारीकरण के लिए उचित वातावरण मिला होगा। यह स्थिति गहन चिंतन एवं सत-असत के विवेक द्वारा ही संभव है। चिंतनशील युवा उचित-अनुचित में भेद करने का साहस रखते हैं। ऐसे युवा उद्योगी होते है, वे निश्चय ही नैराश्य के शत्रु, देशभक्त एवं उज्ज्वल राष्ट्रीय भविष्य निर्माता होते हैं। वे अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति के सहारे दुनिया के असंभव कार्य को संभव कर दिखाते हैं।

उ.14 परीक्षा भवन,

मेरठ।

दिनांक 17 जुलाई, 20xx

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जागरण,

दिल्ली रोड,

मेरठ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विषय शहर में बढ़ते पदूषण के सदंर्भ में।

मान्यवर,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से जनता, अधिकारियों तथा सरकार का ध्यान शहरों में कल-कारखानों के कारण होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

आज के आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का तेजी से प्रसार हो रहा है। इनकी चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से वायुमंडल में प्रदूषण की मात्रा बहुत बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक केंद्रों में मशीनों से निकलने वाले कचरे से भी वायुमंडल मे प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रदूषण चाहे कैसा भी हो, स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। वायुमंडल में शुद्ध वायु की कमी विभिन्न रोगों को जन्म देती है। अपने शहरों के चारों ओर स्थित अनेक उद्योग-धंधों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ तथा कोयले की राख आस-पास के निवासियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल रही है।

मेरा मुख्यमंत्री, जिलाधीशों तथा प्रदूषण विभाग के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि वे इस ओर ध्यान दें तथा इस संबंध में आवश्यक एवं कठोर कदम उठाएँ, जिससे समस्या का उचित समाधान हो सके।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

अथवा

परीक्षा भवन,

गाजियाबाद।

दिनांक 6 फरवरी, 20xx

सेवा में,

विद्युत अधिकारी

गाजियाबाद।

विषय विद्युत कटौती के संदर्भ में।

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान बिजली संकट की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले चार-पाँच महीनों से इस क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति बहुत खराब स्थिति में है। कोई समय निश्चित नहीं है कि बिजली की कटौती कब-से-कब तक की जाएगी और कब आएगी ? बिजली जाती है, तो घंटों तक नहीं आती है।

श्रीमान, मैं एक विद्यार्थी हूँ। बोर्ड की परीक्षाएँ निकट हैं। मेरे जैसे अन्य विद्यार्थी भी इस समस्या से तनाव की स्थिति में रहते हैं। इन्वर्टर भी चार्ज नहीं हो पाता है, गर्मी और मच्छरों का आतंक अलग से है। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो हमारे अध्ययन एवं भविष्य पर इसका अत्यंत नकारात्मक असर पड़ेगा। कृपया हमारी समस्या पर ध्यान देते हुए मोहल्ले में नियमित बिजली आपूर्ति के लिए शीघ्रातिशीघ्र ठोस कदम उठाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.15 **रोटरी क्लब, हरिद्वार**

20 जून, 20xx

सूचना

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

रोटरी क्लब द्वारा 25 जून, 20xx को बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 3 वर्ष से 10 वर्ष से तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए रानीपुर मोड़ पर स्थित हमारे कार्यालय में अपना नाम दर्ज कराएँ।

क, ख, ग

अध्यक्ष : रोटरी क्लब, हरिद्वार

अथवा

जल-विभाग, दिल्ली

19 जुलाई, 20xx

सूचना

जल आपूर्ति में रूकावट

गोविंदपुरी, दिल्ली के सभी क्षेत्रवासियों को सूचित किया जाता है कि पानी के पाइप की मरम्मत के कारण दिनांक 22 और 23 जुलाई, 20xx को जल की आपूर्ति प्रात: 9 बजे से 6 बजे तक बंद रहेगी। असुविधा के लिए खेद है।

क, ख, ग

जल-विभाग सचिव

उ.16

सोनी प्रस्तुत करते हैं

मिनी लैपटॉप

बचत 50% 17999/– 8999/–

विशेषताएँ
- 7 डिस्प्ले
- 3G
- सोशल नेटवर्किंग
- 3GB इंटर्नल मेमोरी
- कोर प्रोसेसर
- ब्लूटूथ
- दो दिन का बैटरी बैकअप

आज ही खरीदें

जल्दी कीजिए कहीं देर न हो जाए

संपर्क करें: लाला लाजपत नगर- । मार्केट, नई दिल्ली। कॉल करें- 1800-0020XX

अथवा

कुबेर फाइनेंस

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड कंपनी

मार्कशीट, पर्सनल, अगेंस्ट प्रॉपर्टी आदि समस्त ऋण मात्र 12 घंटे में पाएँ।

ब्याज दर-2% एग्रीमेंट फीस ₹ 900/-

बिना किसी अनावश्यक कागजात के शीघ्र ऋण पाने के लिए संपर्क करें

मोबाइल नं. - 08888888XXX, 066666XX

उ.17 **उक्ति का अर्थ** ''जैसी करनी वैसी भरनी'' उक्ति का अर्थ है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता हैं।

यह सर्वविदित हैं कि मानव अपने कर्मो के आधार पर ही फल भोगता हैं। सत्कर्मी तथा परिश्रमी मानव सदैव श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करता है तथा बुरे कर्म करने वाला मानव सदैव कर्मानुरूप व्यर्थ भटकता रहता है। इसी विषय मे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कथा दो भाई थे। दोनों कुशाग्र बुद्धि, परन्तु दोनों के आचरण, व्यवहार और जीवन शैली में बहुत अन्तर था। उसमें राम धैर्यवान व परिश्रमी था, परन्तु राज अधीर, चंचल एवं आलसी था। उनके पिताजी ने उन्हें वार्षिक परीक्षा में श्रेष्ठ अंको से उत्तीर्ण होने का लक्ष्य दिया, ताकि दोनों का देश के प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला हो सके।

राम ने पूरी मेहनत और योजना के साथ पूरे समय परीक्षा की तैयारी की और परीक्षा में प्रथम स्थान के साथ पास हुआ। तदुपरांत उसने श्रेष्ठ कॉलेज में भी दाखिला पाया और परिश्रम से प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शानदार भविष्य बनाया। इसके विपरीत राज ने अपना समय व्यर्थ के कार्यो व मित्र मंडलो में व्यतीत किया, जिससे वह विद्यालय की परीक्षा तक उत्तीर्ण न कर सका।

इस प्रकार राज ने खुद के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया और राम कामयाबी की बुलंदियों को प्राप्त कर गया। दोनों ने अपने कर्मो के अनुसार ही फल पाया, इसलिए इस घटना से यह कहावत सही सिद्ध हो गई कि ''जैसी करनी वैसी भरनी।''

सीख इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना-पड़ता हैं।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''संगठन में शक्ति होती है'' अर्थात् साथ मिलकर बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से संभव हो जाता है, इसलिए कहा गया है ''शक्ति ही जीवन है।'' हमें आशावादी, दृढ व अनुकूल विचारों को अपनाकर एक साथ संगठन में रहकर कर्म करना चाहिए। संगठन में शक्ति होती है, अकेला व्यक्ति उचित प्रकार कार्य नहीं कर सकता। इसे निम्न कथा द्वारा भली प्रकार समझा जा सकता है।

कथा एक बार अँगुलियों का आपस में झगड़ा हो गया। पाँचों खुद को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में लगी थीं। अँगूठा बोला में सबसे बड़ा हूँ, उसके पास वाली अँगुली बोली में सबसे बड़ी हूँ। इसी प्रकार खुद को एक-दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में जब निर्णय नहीं हो पाया, तो वह सब अदालत में गए। न्यायाधीश ने सारी बात सुनी और सबसे कहा कि आप लोग सिद्ध करो कि आप कैसे बड़े हैं। अँगूठे ने कहा, में सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ, क्योंकि लोग मुझे हस्ताक्षर के लिए प्रयोग करते हैं। पास वाली अँगुली बोली मुझे लोग किसी इंसान की पहचान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

उसके पास वाली ने कहा कि आप लोगों ने मुझे नापा नहीं अन्यथा मैं ही सबसे बड़ी हूँ। उसके पास वाली अँगुली बोली मैं सबसे ज्यादा अमीर हूँ, क्योंकि लोग हीरे और जवाहरत की अँगूठी मुझमें ही पहनाते हैं। तभी न्यायाधीश ने एक रसगुल्ला मँगवाया और अँगूठे को उठाने के लिए कहा। अँगूठे ने भरपूर जोर लगाया, लेकिन रसगुल्ला नहीं उठा सका तब सारी अँगुलियों ने एक एक करके कोशिश की, लेकिन सब विफल रहीं।

अंत में न्यायाधीश ने सबको मिलकर रसगुल्ला उठाने को कहा, तो झट से सबने मिलकर रसगुल्ला उठा दिया, तब न्यायाधीश ने कहा कि तुम सब एक दूसरे के बिना अधूरे हो, अकेले रहकर तुम्हारी शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जबकि संगठित रहकर तुम कठिन-से-कठिन काम आसानी से कर सकते हो। इसी प्रकार यदि एक लकड़ी को तोड़ा जाए, तो वह आसानी से टूट सकती है, परन्तु यदि लकड़ियों को एकत्रित कर उसे मजबूती से बाँध दें, तो उन लकड़ियों के गट्ठे को तोड़ पाना असंभव हैं।

सीख एक साथ मिलकर संगठन में रहकर किसी भी कार्य को उचित प्रकार से किया जा सकता है। कहा जाता है - ''संगठन में शक्ति होती है'' अकेला चना कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in